पाठ्यपुस्तकों से परे सीखना-सिखाना

कविता शर्मा*

यह वृत्तांत एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा शुरू की गई क्षेत्र कार्ययोजना के अंतर्गत, दिल्ली के सर्वोदय कन्या विद्यालय में मेरे तीन महीनों के अनुभवों पर आधारित है। वर्ष 2012-2013 में जब मैं इस स्कूल में प्राथमिक एवं सीनियर सेकेंडरी स्तर के बच्चों को पढ़ा रही थी तब ऐसे बहुत सारे अनुभव प्राप्त करने का मुझे सुअवसर मिला, जिनसे स्कूली जीवन से जुड़े कई मुद्दों पर मेरी अच्छी समझ बनी। स्कूल के शिक्षकों को भी *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005* एवं उस पर अधिगम के बारे में जानने का अवसर मिला।

इन्हीं तीन महीनों में बीते दिनों की चर्चा कुछ इस प्रकार है। रोज़ की तरह जब मैं कक्षा में पहुँची तो मैंने देखा कि टीचर (गीता) बच्चों को लेकर स्कूल के मैदान में थीं। मैं यह सोचती कि आखिर गीता बच्चों को कक्षा में न बैठाकर रोज़ मैदान में क्यों ले जाती हैं? पूछने पर वह कहतीं कि वह उन्हें कुछ क्रियाकलाप करवाती हैं, परंतु मैदान में स्थिति इसके विपरीत ही होती थी। सर्दियों के दिन थे तो टीचर मैदान में कोने में धूप सेंकती और बच्चे अलग-अलग जगह अपने मनमाने खेल खेलते। देखा जाए तो आप कहेंगे कि इसमें हर्ज़ ही क्या है? आखिर *एनसीएफ-2005* भी तो स्कूली ज्ञान को कक्षा के परे बच्चों को बाहर ले जाने व खेल आदि के अवसर देने की बात तो करता है। मैंने यह भी पाया कि कक्षा में सारी खिड़कियों के शीशे टूटे रहने के कारण ठंडी हवा अंदर आती है और बच्चों को बैठने के लिए दी गई दरी भी जगह-जगह से फ़टी होने के कारण बच्चों को ठंड से काफ़ी परेशानी होती थी, परंतु जरा सोचिए कि क्या इसका विकल्प कुछ और भी हो सकता है? क्या खेल के मैदान में गीता सीखने-सिखाने के कुछ अर्थपूर्ण अवसर बच्चों को दे सकती थीं?

उस दिन जब मैं गीता के पास पहुँची तो देखा कि वह पाँचवीं कक्षा की तीन-चार लड़कियों को अपने पास बिठाकर उनसे बातें कर रही थीं। मैं भी जाकर उनके साथ बैठ गई। यह देखकर गीता ने तुरंत उन बच्चियों को जाने का इशारा किया। मैंने कहा कि आप लोग अपनी बातचीत जारी रखिए तो गीता बोली, "मैडम, ऐसी कोई बात नहीं है। बस इनके पेट में दर्द था, तो यह बैठना चाहती थीं।"

मैंने पूछा, "क्यों क्या हुआ?"

मैंने छात्राओं की ओर देखा तो एक छात्रा वर्षा ने कहा, "मैडम यूँ ही।"

---

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली-110016

गीता ने कहा, "मैडम आप तो जानती हैं न, वही हम औरतों वाली प्रॉब्लम।"

मैंने पूछा, "अच्छा गीता, क्या आप इन सबकी चर्चा करती हैं?"

गीता ने जवाब दिया, "मैडम, कुछ ज़्यादा नहीं।"

उनका जवाब सुनने के बाद मैंने कहा कि, 'अरे, लेकिन क्यों नहीं यह तो बहुत ज़रूरी है।'

इस पर गीता बोली, "मैम, इसका पाठ्यक्रम से तो कुछ संबंध है ही नहीं।"

मैंने कहा, "नहीं गीता। ऐसा नहीं है। आप तो जानती हैं कि शिक्षा के अधिनियम 2009 के अंतर्गत पाठ्यचर्या का सबसे महत्त्वपूर्ण उद्देश्य बच्चों का संपूर्ण विकास है, जिसमें केवल मानसिक ही नहीं, शारीरिक विकास भी शामिल है। इनसे स्वास्थ्य संबंधी विषय पर बातचीत तथा उस पर इनकी जानकारी एवं संवेदनशीलता विकसित करना भी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है और वैसे भी 'अच्छे व बुरे स्पर्श की बात भी पर्यावरण अध्ययन में शामिल है।"

गीता ने मेरी बात सुनने के बाद कहा, " मैडम, वह सब तो ठीक है परंतु मुझे तो पता ही नहीं है कि मैं इस विषय पर कैसे बातचीत करूँ? इसके अलावा मैं यह भी नहीं जानती कि किस सीमा तक हम इन बच्चों से चर्चा कर पाएँगे? वैसे भी सारी बात तो उनकी समझ में आएगी नहीं और मुझे तो खुलेआम यह बात करने में शर्म भी आती है।"

फ़िर मैंने कहा, "गीता, सबसे पहली बात तुम एक टीचर हो तथा दूसरी, एक औरत। तुम तो उन छोटी बच्चियों के लिए दूसरी माँ के समान हो। इन बच्चों के माता-पिता के पास तो इतना समय, संसाधन एवं शिक्षा नहीं है, ऐसे में हमारा कर्तव्य और भी बढ़ जाता है।"

मेरी बात पर सहमति जताते हुए गीता ने कहा, "मैडम आप मेरी मदद करेंगी तो मैं अवश्य ही प्रयास करूँगी।" मेरे 'हाँ' कहने पर गीता ने सभी बच्चियों को अपने पास बुलाया और मैंने अपनी चर्चा शुरू की।

मैंने बच्चों से पहला प्रश्न पूछा, "अच्छा तो यह बताओ कि आप सब लड़के हो या लड़कियाँ ?"

सभी छात्राओं ने ज़ोर से कहा, "लड़कियाँ।"

आगे मैंने पूछा, "क्यों?"

रीना ने जवाब दिया, "मैम, हमारी चोटी बन सकती है लेकिन लड़कों की नहीं।"

मेरा अगला प्रश्न था, "क्या आपमें से किसी ने कभी लड़के या आदमी के लंबे बाल देखे हैं ?"

समीरा ने कहा, "मैडम, मैंने एक फ़िल्म देखी थी, जिसमें हीरो की लंबी चोटी थी।"

फिर सिमरन ने कहा, "मैम, मेरे तो पापा और भाई दोनों के बाल लंबे हैं।"

फिर मैंने कहा, "शाबाश! इसका मतलब कोई और कारण है कि हम लड़कों से अलग हैं? सोचो।"

रमा ने कहा, "मैडम, लड़के पैंट- शर्ट पहनते हैं और लड़कियाँ साड़ी और सूट।"

रमा की बात से असहमति जताते हुए रीना ने कहा, "नहीं, लड़कियाँ तो पैंट-शर्ट पहन सकती हैं परंतु लड़के साड़ी नहीं पहन सकते।"

रीना की बात सुनने के बाद मैंने कहा, "रीना ने एक अच्छी बात कही है पर ज़रा सोचो कि साड़ी न पहनने के लिए उन्हें क्यों ऐसा लगता है कि वे लड़के हैं और तुम लड़कियाँ?"

थोड़ी देर के लिए सब लड़कियों ने आपस में बातचीत की फिर सोनू बोली, "मैडम उनके नाम से पता चलता है कि वे लड़का है या लड़की।"

मेरे चेहरे पर एक मुस्कुराहट आई तो बच्चे भी मुस्कुराते हुए सोचने लगे कि क्या वाकई ऐसा है? तभी एक बच्ची तपाक से बोली, "मैडम इसका नाम सोनू है और मेरे भाई का भी।" इसके साथ ही कई सारे नाम बताए जो लड़के व लड़कियों दोनों के होते हैं। मैंने फिर सोचने को कहा और पूछा, "आपको अपनी मम्मी और पापा को देखने में क्या फ़र्क लगता है?"

सलीमा ने कहा, "मैडम मेरे पापा की दाढ़ी है पर मम्मी की नहीं।"

उसके बाद मैंने अपनी बात को बढ़ाते हुए कहा, " इसका मतलब यह है कि हम कुछ मायनों में लड़कों से अलग हैं। पर क्या आप सबने गौर किया कि हम सब आपस में भी बहुत भिन्न हैं। क्या निशा और रीना एक-सी हैं?"

सभी ने 'न' में उत्तर दिया।

चर्चा को जारी रखते हुए मैंने पूछा, "ध्यान से देखकर बताओ कि क्या-क्या अलग है और क्या-क्या समान?"

बच्चों ने बहुत सारे जवाब दिए जैसे (समानताओं में) – बालों का रंग, शरीर के अंग, पहनावा आदि और अलग-अलग में उनका कद , आदतें जैसे- हँसना, बोलना और बहुत सारी बातें बताईं।

इसके बाद मैंने पूछा, "तो इसका क्या अर्थ निकलता है?"

बच्चों ने जवाब दिया, "मैम हम सब कुछ बातों में एक से और कुछ बातों में भिन्न हैं।"

फिर मैंने पूछा, "अच्छा, यह बताओ कि तुममें से कभी किसी ने जानवर या पक्षी का बच्चा पैदा होते देखा है?"

सिमरन ने कहा, "हाँ मैम, मैंने अपने गाँव में गाय को देखा था जब उसके बछड़ा पैदा हुआ था।"

मोहिनी ने बताया कि उसने अंडे से चूज़े को निकलते हुए देखा था। कई बच्चों ने और भी उदाहरण दिए। उन्होंने टेलीविज़न पर देखी हुई बातें भी बताईं। इसी बात को आगे बढ़ाते हुए मैंने कहा, "अच्छा इसका मतलब यह है कि कुछ जानवर बच्चे देते हैं और कुछ अंडे।"

अपनी बात खत्म करने के बाद मैंने पूछा, "क्या आपने कभी गुलाब के पौधे पर गेंदे का फूल उगा देखा ? या फिर आम के पेड़ पर अमरूद लगे देखा ?"

सभी बच्चों ने कहा, "नहीं, मैडम जो जिस चीज़ का पौधा/पेड़ होता है वह उसी चीज़ को ही पैदा करता है।"

फिर मैंने पूछा, "अच्छा तो इंसान ही इंसान के बच्चे को जन्म देता है?"

सभी बच्चे एक सुर में बोले, "हाँ मैम।"

फिर मैंने पूछा, "तुम्हें किसने पैदा किया?"

एक बार फिर बच्चों ने एक सुर में कहा, "माँ ने।"

बात को आगे जारी रखते हुए मैंने कहा, "तो क्या यह मान लें कि सभी जानवरों में भी मादाएँ बच्चों को जन्म देती हैं ?"

शशि ने कहा, "हाँ मैम, यह मैंने टीवी पर भी देखा है। शेरनी, हथिनी ही अपने बच्चों को पैदा करतीं हैं और उन्हें दूध भी पिलाती हैं?"

शशि की बात से सहमति जताते हुए मैंने कहा, "हाँ बच्चो, इस दुनिया में मादाएँ ही ऐसा कर सकती हैं और यह हमारे लिए गर्व की बात है। पर हममें ऐसा क्या है जिससे यह केवल हम ही कर सकते हैं । जैसे मुर्गी अंडा देती है जिसमें से चूज़ा निकलता है ठीक उसी तरह हममें भी अंडा बनता है जो कुछ दिन बाद में फूट जाता है और रक्त हमारे शरीर से बाहर आता है। हर महीने चलने वाला यही चक्र ही मासिक धर्म है , तो यह हुई हमारे शरीर की बात।"

फिर मीना ने कहा, " मैडम, यह कुछ ही लड़कियों को क्यों हो रहा है ? हम सभी को क्यों नहीं ?"

मीना की बात सुनने के बाद मैंने मीना से कहा, "जैसे कोई बीज बोते हैं या उससे अंकुर फूटते ही उस पर फूल नहीं आते। कुछ समय बाद ही पौधों या पेड़ों पर जब वे कुछ बड़े हो जाते हैं फूल या फल लगते हैं। इसी तरह बालिकाओं में भी, यह नौ से चौदह वर्ष की आयु के बीच बच्चियों में किसी भी समय शुरू हो सकता है। जैसा मैंने बताया कि हम सब एक-दूसरे से अलग हैं जैसे किसी का दाँत पहले आया तो किसी का बाद में। किसी का कद पहले बढ़ता है और किसी का बाद में। ठीक उसी तरह यह भी हममें अलग-अलग समय पर शुरू होता है। परंतु इसके शुरू होने या न होने में किसी प्रकार की घबराहट की आवश्यकता नहीं है।"

आगे सवीना ने पूछा, "तो क्या यह हर महीने अपने आप ही शुरू हो जाता है।"

मैंने सवीना के प्रश्न का जवाब देते हुए कहा, "हाँ सवीना, जैसे कुछ बातें हमारे शरीर में हमारी इच्छा से होती हैं और कुछ बिना हमारी मर्ज़ी से। क्या तुम बता सकती हो वे कौन-सी बातें हैं?"

सवीना मेरे प्रश्न का जवाब देते हुए बोली, " हाँ मैम, हमारा चलना, घूमना और उठना हमारी मर्ज़ी से होता है।"

मनू ने कहा, "मैम, खाना भी हम अपनी मर्ज़ी से खाते हैं।"

आगे निशा ने कहा, "पानी भी मर्ज़ी से पीते हैं।"

फिर मैंने पूछा, "हाँ, बिल्कुल। पर क्या आपके बाल और नाखून आपसे पूछकर बढ़ते हैं और क्या नींद आपकी मर्ज़ी से आती है? "

बच्चों ने कहा, "नहीं मैम और हमारा दिल भी अपने आप धड़कता है।"

फिर मैंने पूछा, "क्या हम साँस भी अपनी मर्ज़ी लेते हैं?"

सोनिया ने कहा, "नहीं, मैं तो नाक बंद करके साँस रोक भी सकती हूँ और जब चाहे अपनी मर्ज़ी से ले सकतीं हूँ।"

सोनिया को समझाते हुए मैंने कहा, "नहीं सोनिया, जब तुम सो जाती हो तो साँस तब भी चलती है।"

मेरी बात से सहमति जताते हुए शशि ने कहा, “मैम, यह हमारी मर्ज़ी के बिना होता है। पलक भी अपने आप ही झपकती है।”

शशि की बात सुनने के बाद मैंने कहा, “हाँ बिल्कुल सही। ठीक इसी तरह मासिक धर्म भी अपने आप ही होता है। बस ज़रूरत है तो साफ़-सफ़ाई का ध्यान रखने की। अपने अंदर के कपड़े (अंदरूनी) रोज़ बदलने चाहिए और हाथ साबुन से ज़रूर साफ़ करने चाहिए। अगर कोई ज़रूरत हो तो परिवार या स्कूल में बड़ी औरतों या डॉक्टर की सलाह माननी चाहिए।”

सभी बातें गौर से सुनती हुई रमा कुछ और ही सोच रही थी। वह बोली, “मैम, मेरी माँ कहती है कि अब तुम बड़ी हो इसलिए लड़कों से बात नहीं करनी चाहिए और उनसे दूर रहना चाहिए।”

रमा को समझाते हुए मैंने कहा, “रमा, माँ के कहने का अर्थ शायद यह है कि हम सबको ऐसी किसी भी तरह की स्थितियों से बचना चाहिए जिससे हमें शारीरिक या मानसिक रूप से नुकसान हो।”

बात आगे बढ़ाते हुए मैंने बच्चों को समझाया कि “अगर कोई व्यक्ति चाहे वह आपके रिश्तेदार व परिचित (जिसमें पिता या भाई भी हों) आपको छूते या प्यार करते हैं तो यह ध्यान रखने कि ज़रूरत है कि वे कोई ऐसी जगह न छुएँ (जैसे- आपकी छाती, प्राईवेट पार्ट्स (गुप्तांग) आदि) जहाँ छूने से आपको अच्छा नहीं लगता तो आप तुरंत इसको रोकें।”

मान्या ने बताया, “मेरी माँ ने बताया है कि कोई ऐसा करे या करने की कोशिश करे तो तुम ज़ोर-ज़ोर से चीखना और परिवार में बड़ों या स्कूल में अपनी टीचर को भी बताना।”

इसके बाद छात्राओं ने अपने इस प्रकार के कई अनुभव बताए जिन पर खुलकर चर्चा करने से उनकी इस विषय पर कुछ समझ एवं इस पर तुरंत कोई कदम उठाने के लिए संवेदनशीलता भी बनी।

इसके बाद अगले दिन पूरी कक्षा के साथ जिसमें लड़के भी थे फिर से अंडे और बच्चे देने वाले जानवरों पर चर्चा की। मैंने क्लास की दीवार पर दो चार्ट टाँग दिए। एक पर अंडे देने वाले जानवर और दूसरे पर बच्चे देने वाले जानवर लिखा। बच्चों ने बड़ी उत्सुकता से इसमें भाग लिया। बच्चों ने कई जानवरों के नाम बताए जिन्हें मैंने बच्चों की मदद से वर्गीकृत किया और उन पर चर्चा भी की।

अगले दिन मैंने उन्हें अपने परिवार के हर व्यक्ति के बारे में कुछ जानकारी इकट्ठा करने को कहा और फिर स्वयं से उसकी तुलना करते हुए विभिन्न समानताओं एवं असमानताओं के बारे में लिखने को कहा। उन सबके लिखे हुए कार्य को मैंने पढ़ा तो मुझे हरेक के बारे में जानने का मौका मिला।

मैंने उन्हें किन्हीं दो अपनी पसंद के जानवर/पक्षी को चुनकर उससे जुड़ी जानकारी इकट्ठा करने का कार्य- जैसे; उनके शरीर की बनावट, वे कैसे विभिन्न कार्य करते हैं? आदि। अपनी जानकारी को हर बच्चे ने कक्षा में बताया। सभी बच्चों ने उस पर चर्चा की और मैंने कक्षा में दो चार्ट लगवाकर विभिन्न नामों को उन्हीं समानताओं एवं असमानताओं के आधार पर वर्गीकृत किया। बच्चों ने इसमें भरपूर आनंद उठाया। कुछ बच्चों ने उनके चित्र भी बनाए। उन्हें हमने कक्षा

में सजाया। गीता ने कहा, "मैडम, इसमें तो ई.वी.एस. के परिवार एवं सदस्य के थीमों से जुड़े बहुत से कन्सेप्ट्स (धारणाएँ) आपने बहुत आसानी से समझा दिए।" बच्चे चर्चा द्वारा स्वयं करके देखते हुए न केवल अपने आस-पास से परिचित हुए, बल्कि उनसे जुड़ी महत्वपूर्ण बातें जानकर संवेदनशील भी बने।

❑❑❑

समावेशन की नीति

समावेशन की नीति को हर स्कूल और सारी शिक्षा व्यवस्था में व्यापक रूप से लागू किए जाने की ज़रूरत है। बच्चे के जीवन के हर क्षेत्र में वह चाहे स्कूल में हो या बाहर, सभी में बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित किए जाने की ज़रूरत है। स्कूलों को ऐसे केंद्र बनाए जाने की आवश्यकता है जहाँ बच्चों को जीवन की तैयारी कराई जाए और यह सुनिश्चित किया जाए कि सभी बच्चों, खासकर शारीरिक या मानसिक रूप से असमर्थ बच्चों, समाज के हशिए पर जीने वाले बच्चों और कठिन परिस्थितियों में जीने वाले बच्चों को शिक्षा के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र के सबसे ज़्यादा फ़ायदे मिलें। अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के मौके और सहपाठियों के साथ बाँटने के मौके देना बच्चों में प्रोत्साहन और जुड़ाव को पोषण देने के शक्तिशाली तरीके हैं।

— राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005